Anveshan (अन्वेषण): A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 2, Issue 1 – 2018

बैगा जनजातीय त्यौहारों में सामाजिक और अध्यात्मिक संवाद

केशव पटेल*

"आहा हाय रे चल जाबो गंगा आसनांदे
नरामदा मोर बांधे बहतुरा कह रावय
लय धरबे बाई धूपे कडैया मैं धरहू नारियर के भेला बांधे
बछुरा कहरावय।"

भारतीय उपमहाद्वीप विश्व में अपने सांस्कृतिक और पारंपरिक त्यौहारों के रूप में एक अलग ही पहचान रखता है। ख़ासकर यहां के प्राचीन त्यौहारों का एक अलग ही दर्शन है। प्रत्येक हिंदू त्यौहार एक विशेष पूजा के साथ संपन्न किए जाते हैं, देश के त्यौहार लोगों को उम्र, जाति और लिंग के भेदभाव के बिना एक साथ एकजुट होकर मानाने की परंपरा है। भारतीय प्राचीन त्यौहारों में एक तरफ जहां इसकी सांस्कृतिक विरासत देखने को मिलती है वहीं दूसरी तरफ सामाजिक एकता का भी प्रभाव है। इन्ही भारतीय प्राचीन त्यौहारों में से एक है देश के हृदय प्रदेश के मंडला की प्राचीन बैगा परंपरा। बैगा मध्यप्रदेश की सबसे प्राचीन जनजातियों में से है। प्रदेश में यह मंडला जिले की मुख्य आदिवासी जाति है। जिलें में बैगाचक 56 गांवों को मिलाकर बना है और ये सारे गांव आदिवासी इलाके हैं। इसमें सबसे ज्यादा बैगा जनजाति के लोग निवास करते हैं।ऐसा माना जाता है बैगा और गोंड जो कि दोनों सगे भाई हैं और इन्ही से संपूर्ण मानव जाति उत्पत्ति हुई हैं।बैगाओं को प्रकृति पुत्र भी कहा जाता है। स्मिल और हीरालाल (1915) बैगाओं को छोटा नागपुर की आदि जनजाति बुइयाँ की मध्यप्रदेश शाखा, जिसे बाद में बैगा कहा जाने लगा, मानते हैं। जहां तक शाब्दिक अर्थ का प्रश्न है भुईयां (भुई, पृथ्वी) और भूमिज (भूमि-पृथ्वी) समानार्थी हैं एवं "भूमि" से संबंधित अर्थ बोध कराते हैं। यह मुमकिन है कि मध्यप्रदेश के इन आदि बांशन्दों को बाद में आए हुए गोंडों ने बैगा को आदरास्पद स्थान दे दिया है।

इस संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है कि भुईयां की इस (बैगा) शाखा ने छोटा नागपुर से सर्वप्रथम छत्तीसगढ़ में प्रवेश किया हो और कालान्तर में अन्य आदिवासियों के द्वारा ये मंडला और बालाघाट के दुर्गम वनों में खदेड़ दिए गए हों। मंडला जिले का "बैगायक" क्षेत्र आज भी सघन वनों से पूर्ण है। इस क्षेत्र के बैगा आज भी अति जंगली जीवन बिता रहे हैं, मंडला के सघन वनों में रहने वाले बैगाओं की बोली में पुरानी छत्तीसगढ़ी का प्रभाव है। बालाघाट के बैगाओं की बोली में भी छत्तीसगढ़ी का प्रभाव स्वाभाविक रूप से देखने को मिलता है।

ग्रिथर्सन का यह कहना अर्थ रखता है कि पहले बैगा अधिकांशत: छत्तीसगढ़ के मैदान में फैले थे और वहां से ही ये हैहयवंशी राजपूतों द्वारा दुर्गम क्षेत्रों की ओर भगाए गए। भुइयां के अतिरिक्त, भनिया लोगों का भी संबंध बैगाओं से जोड़ा जाता है। बैगाओं की एक शाखा मैना राजवंश ने किसी समय उड़ीसा में महानदी के दक्षिण में बिलहईगढ़ क्षेत्र पर शासन किया था। मंडला में ये कहीं पर "भुजिया" कहलाते हैं जो "भुइयाँ" का ही तत्सम शब्द है। (स्मिथ और हीरालाल 1915)।

*Research Scholar, MGCGVV, Madhya Pradesh.
E-mail Id: Acharya1225@gmail.com

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-4044**

बैगाओं के रहन सहन का करीब से अध्ययन करने पर साफ पता चलता है कि उनका रहन सहन और उनके रीति रिवाज और त्यौहारों में प्रकृति और समाज से सीधा संबंध है, उनकी सभी परंपराओं में सामाजिक और अध्यात्मिक संवाद का एक रास्ता खुलता है। यूं तो बैगाओं पूरे वर्ष भर त्यौहारों सा महौल होता है लेकिन वर्ष में कुछ ऐसे भी त्यौहार होतें जिनका समुदाय को बेसब्री से इंतजार होता है। इस समुदाय में एक उत्सव रसनबा नाम से मानाया जाता है जिसे बैगा अपने आदि पुरूष " नंगा बैगा" की याद में मनाया जाता है। यह उत्सवआदि बैगा के मधुमक्खियों के शहद को बिना उनकी अनुमित चखने के बाद उनसे क्षमा याचना के रूप में मनाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि शहद को चखने के बाद जब आदि बैगा को अहसास हुआ कि उनसे गलती हो गई तो उन्होंने मधुमक्खियों में क्षमा याचना करते हुए हर 9 वें दिन उनकी पूजा करने के परिणाम स्वरूप कलांतर में उत्सव के रूप में प्रचलित हो गई। इस उत्सव का सीधा संबंध प्रकृति द्वारा प्रदत्त संसाधनों और खाद्य पदार्थों के उचित उपभोग की तरफ इशारा करता है। **(Placeholder1)** (mpinfo , 2017)

"पानी गिरय अरि अवसार सबय के लाने आशाय हय रें
लोड़ा पकही कोदो पकही और पकही धान पोंहणा आही तौने करबो मान सबय के आशा हय रे"

बैगा समुदाय में त्यौहारों का आरंभ कृषि की बुआई यानि की जून जुलाई के साथ ही प्रारंभ हो जाता है, जून-जुलाई यानि आषाठ मास के समय मनाया जाने वाला त्यौहार बिदरी कहलाता है। यह बैगा समुदाय का सबसे महत्तवपूर्ण त्यौहार माना जाता है क्योंकि यह समय खेतों में बुआई का समय होता है जब बैगा धरती माता की पूजा अर्चना करता है और खेतों में अच्छी फसल आने की कामना करता है। बिदरी के बाद सावन के पहले अमावश यानि जुलाई-अगस्त में हरेली का त्यौहार मानाया जाता है,हरेली का यह त्यौहार वास्तव में बैगा का प्रकृति के प्रति समर्पण का एक और दिन होता है। साथ ही अपने जीवन निर्वाह के लिए दिए गए संसाधन यथा गाय, भैंस और खेत में हल जोतने के लिए बैल की पूजा का दिन होता इस दिन घर का मुखिया जंगल जाकर कुछ ख़ास तरह के पत्ते और टहनियां लाता है और जानवरों को बांधने वाले स्थानों की साफ सफाई लीपाई पुताई करता है, इस त्यौहार का एक सामाजिक उद्देश यह भी है कि इस दिन बैगा अन्य घरों में जाकर वहां भी ईष्ट देव से उस समस्त परिवार की कुशल मंगल कामना करता है और पूरे वर्ष भर धन धान्य से परिपूर्ण होने का आराधना भी करता है।

"सिटापिट-सिटापिट मेंगो बरासय पथराउ
तरी नांगिन लोरेय।
काही के पथरा तरी नागिन लोरय रे,
सूरज देवता पानी ला बरसाये।"

नवाखेरी या नवा फसल का त्यौहार फसल की कटाई के समय मनाया जाता है यह त्यौहार प्रकृति और ईष्ट देव के प्रति कृतज्ञता का त्यौहार होता है। इस दिन प्रथा है कि फसल की कटाई के बाद सबसे पहले भोग प्रकृति और ईष्ट देव को लगाया जाता है। इस दिन घर में दाल-भात के साथ नया अन्न भी मिलाया जाता है। इस भोग को लगाने से पहले घर का सबसे बुजुर्ग व्यक्ति पूरे सम्मान के साथ देवाताओं को घर पर भोजन के लिए आमंत्रित करता है । (विजय, 2009) दशेरा दिवाली बैगा समुदाय में सबसे उत्साह का त्यौहार होता है, यह लगभग तीन महीने तक मनाया जाने वाला त्यौहार होता है। इस त्यौहार में बैगा अपने धन्य धान्य की पूजा अर्चना तो करता ही है अपने पारंपरिक लोक नृत्यों के साथ इस उत्सव को मनाता है।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

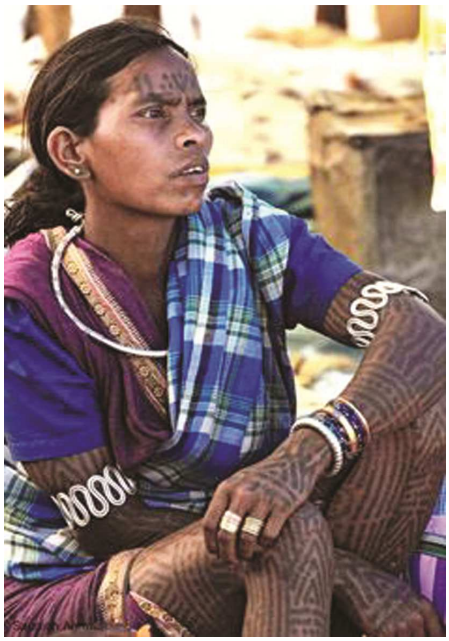

दिवाली के दिन बैगा अपने आस पास के गांव में भी जाकर वहां के हर कमरें में विजारित देवाताओं को जाग्रत करता है, इस क्रिया के पीछे मनाना है कि घर के प्रत्येक हिस्से में देवाताओं का वास होताहै जो घर के सभी सदस्यों की रक्षा करते हैं साथ ही बुरी आत्माओं से उनका बचाव करते हैं। इस पूरी पूजा अर्चना से साफ स्पष्ट होता है कि बैगा समुदाए में "सर्वे भंतु सुखिनः" भाव है जो समाज कल्याण के लिए अत्यंत आवश्यक है। फाग यानी होली बैगा में भी रंगों का त्यौहार होता है इस दिन बैगा प्राकृतिक संसाधनों से बने रंगों से होली खेलते हैं जो उनके प्रकृति से अटूट प्रेम को दर्शाता है। बैगाओं का सामाजिक जीवन भी अत्यंत समान्य और सहज है किसी तरह कोई आडबंर इनमें नहीं पाया जाता है यहां तक कि इनकी सामाजिक व्यव्यस्था में विधवा-विवाह जैसी प्रथा प्राचीन समय से विद्यमान जहां एक तरफ अभिजात्य हिन्दू समाज को विधवा-विवाह को सामाजिक रूप से स्वीकृति देने में सैकडों साल लग गए। बैगा लोगों का जीवन अत्यंत सादा होता। आर्थिक सम्पन्नता की आकांक्षाए लगभग नहीं है। खरीदारी करने बाजार गया, बैगा पैसे को जल्दी से जल्दी खर्च कर घर लौटना पसंद करता है। जो कि उसके धन के प्रति त्याग की भावना को दिखाता है, समुदाय में मानना है कि धन का संचय जरूरत के हिसाब से होना चाहिए अत्याधिक धन का संचय रोगक का कारण बनता है। प्रकृति के अत्यंत करीब होने के कारण बैगा साज वृक्ष

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

की पूजा करते हैं यदि पूजा करते समय उनके हाथ में साज के पत्ते दे दिए जाएं और उनसे कोई बात पूछी जाए तो वे कभी झूठ नहीं बोलते। बैगा किसी भी बंधन को पंसद नहीं करते फिर चाहे वह सम्पत्ति का बंधन ही क्यों न हो, बैगा समुदायत में कोई उनके उल्लास में कोई कमी नहीं ला पाती. क्योंकि वे आडंबरीय धमा चौकड़ी से कोसों दूर है। चैत्र की नवरात्रि के दिन से नये साल की गणना का आरंभ होता है. समुदाय में यह पर्व नवरात्रि के रूप में हर्षोउल्लास से मनाया जातै है, ज्वारे बोए जाते हैं और कलश की स्थापना की जाती है, नया साल का हर्षोल्लास से साथ स्वागत करते हैं. उसी मान्य पूजा पद्धति को ही गोंडी भाषा में 'तोड़ी 'पूजा भी कहते हैं. जिसका अभिप्राय है नयासाल, नयी फसल, नए उमंग निमित्त हवा, पानी माटी धूप आदि प्रकृति शक्तियों की प्राप्य याचना के साथ पूजा अर्चना भी करते हैं। जब पलास की कली-कली लाज से रंग उठती है, अमराई जब अपने उमड़ते यौवन की सुंगध से बौरा उठती है, जब बसंत का यौवन रंग-बिरंगे पुष्पों के रूप में फूटकर अपने उभार पर आ जाता है, तब गोंडवाना का वायुमंडल फाग नामक बसंत ऋतु के गीतों से गूंज उठता है. नार गोदा का तब सारा-वातावरण नगाड़ा, मांदर, टिमकी, झांझ मंजीरा से दमक उठता है, तब गांव का सारा जन जीवन सुर-ताल-धुन से झूम उठता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. Mpinfo . (2017). Retrieved from http: //mpinfo.org.

[2]. **एल्विन, व**. (1961). **ए न्यू डील फॉर ट्रायबल इंडिया**. Delhi: Govt of India.

[3]. **कल्पना, ड. ज**. (n.d.). **बैगा जनजाति की सांस्कृतिक परंपरा में लोकपर्वों का महत्तव, स्वरूप परिवर्तन. आदिम जाति अनुसंधान एवं विकास संस्थान।**

[4]. **खिडवरकर, ए. ज**. (15 March 1986). **बैगा. आदिवासी लोक कला परिषद भोपाल।**

[5]. **नायडू, प. आ**. (n.d.). **भारत के आदिवासी ।**

[6]. **विजय, ड. च**. (2009). **प्रकृति पुत्र बैगा**. bhopal: **हिन्दी ग्रंथ अकादमी**.

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044